समकालीन दर्शन में ईश्वरवाद

डॉ0 मनोज कुमार सिंह

भारतीय धर्म–दर्शन में ईश्वरवाद चिन्तन का मूल केन्द्र रहा है। जितने भी उपासनामूलक धर्म हैं चाहे वे भारतीय हों या पाश्चात्य सभी किसी न किसी रूप में ईश्वर को अपना प्रमुख विषय मानते है। ईश्वर जो इस जगत् का कर्ता है, की अनुभूति ही सच्ची धार्मिक अनुभूति मानी जाती है। ईश्वर परम सत्य है और परम सत्य के अस्तित्व में आस्था ही ईश्वरवाद का पोषक है। परम सत्य के अन्वेषण में मन, वचन, कर्म के शुद्धि की नितान्त आवश्यकता होती है। जब हम सत्य का मन, वचन और कर्म से अनुसरण करने लगते हैं तो सत्य की महिमा हमारा मार्ग–प्रदर्शन करने लगती है। सत्य विश्वव्यापी और सर्वव्यापक शक्ति है जो मानव के अन्तःस्थल में निवास करती है, मानव के अन्तःस्थल में निवास करनेवाला सत्य ही ईश्वर है। जो अपने अन्दर निहित सत्य और ईश्वर में विश्वास करने लगता है उसे विश्वव्यापी सत्य अपनी गोद में लेने के लिए सदा तत्पर रहता है। जिस भाँति एक नदी को सागर अपने आप में विलिन कर लेता है, ठीक उसी भाँति मानव के अन्दर निहित ईश्वर तत्त्व को विश्वव्यापी परमात्म तत्त्व अपने में एकीभूत कर लेता है। और, इसी एकीभूतता से ईश्वरवाद का जन्म होता है।